हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार, 8 मार्च 2026

10 कोबी ने फिर की ड्राईपोर्ट तथा ट्रांसपोर्ट नगर बनाने की मांग

11 चिकित्सकों की हड़ताल के कारण मरीज बेहाल, ओपीडी रही बंद

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS

THE TIMES OF INDIA
Awarded with Times School Survey award 2025-26

10 YEARS OF EXCELLENCE

ADMISSIONS OPEN
SESSION 2026-27

क्या पढ़ें ? | कहाँ से पढ़ें ? | कैसे आगे बढ़ें ?

झज्जर में सबसे बड़ा स्ट्रीम सिलेक्शन एवं करियर काउंसलिंग सेशन !

कक्षा 10वीं के बाद चुनें सही राह

अपने उज्ज्वल भविष्य के अगले 50 वर्षों की मजबूत नींव आज ही रखें।

तारीख़ : 9-मार्च-2026

संस्कारम पब्लिक स्कूल, खातीवास कैंपस

निःशुल्क काउंसलिंग सत्र

Students will receive detailed guidance about

- JEE / IIT Preparation
- NEET / Medical Careers
- NDA / Defence Services
- CA / Commerce Careers
- IAS / Civil Services
- CLAT / Law Careers
- Security & Government Services
- Artificial Intelligence (AI) & Future Technologies Careers
- Cyber Security & Digital Safety

प्रिय अभिभावकों,
कृपया सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा इस महत्वपूर्ण करियर काउंसलिंग सत्र में अवश्य भाग ले, ताकि वह अपने भविष्य के बारे में सही और सोच-समझकर निर्णय ले सके।

Our Proud OUR PROUD JEE MAIN ACHIEVERS

Selection in IIIT Bhopal
Tanishk S/o Naresh C. Dadri

Selection in IIIT Bhopal
Samir S/o Dharambir Hansi, Hisar

Selection in IIT Rurkee
Tamanna D/o Bijender Bhadana

Selection in NIT Delhi
Shubham S/o Kailash Dubladhan

99.13 %ile
Muskan D/o Govind
Koelpur

99.01 %ile
Shubham S/o Ranbir
Kheri Khummar

99.67 %ile in Maths
Yash Kadian S/o Jagbir
Beri

97.14 %ile
Navanshu S/o Hemdutt
Paharipur

97 %ile
Taksikha D/o Vijay
Kabulpur

96.67 %ile
Anuj S/o Sunil Kumar
Baghpur

96.43 %ile
Saina D/o Rajesh Kumar
Jahazgarh

96.3 %ile
Kunal Siwach S/o Rakesh
Paharipur

96.28 %ile
Vidhi D/o Sandeep
Jhajjar

95.84 %ile
Irfan Khan S/o Abdul Sattar
Dubaldhan

95.8 %ile
Kanika D/o Balwan Singh
Kheri Khummar

95.48 %ile
Daivik S/o Yogesh Kumar
Jhajjar

95.3 %ile
Nitika D/o Harish Kumar
Silani

94.54 %ile
Harshita D/o Bhupender
Babra

94.2 %ile
khushi D/o Arun kumar
kheri khummar

94.3 %ile
Jitender S/o Parveen
Koelpur

93.99 %ile
Hitender S/o Dipesh
Dujana

91.8 %ile
kunal Sehrawat S/o Jitender
Jhajjar

91.07 %ile
Jatin S/o Sanjay Kumar
Jhajjar

92.23 %ile
Armaan S/o Vinod
Jhajjar

91.3 %ile
Rashi D/o Pawan
Jhajjar

90.26 %ile
Phalak D/o Vikash Singh
Majra D

90.13 %ile
Mann S/o ravinder Yadav
kheri khummar

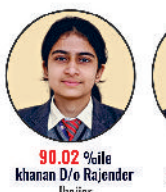
90.02 %ile
khanan D/o Rajender
Jhajjar

89 %ile
Ishu D/o Jaivinder
Bhindawas

87.04 %ile
Jai Guran S/o Manoj Kumar
Jhajjar

86.6 %ile
Navya D/o Sangeet Kumar
Jhajjar

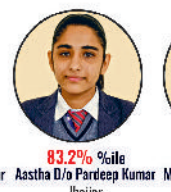
83.2% %ile
Aastha D/o Pardeep Kumar
Jhajjar

80.29 %ile
Muskan S/o Jagbir Singh
Jhajjar

Our Proud OUR PROUD NEET ACHIEVERS

Selection in L. Hardinge Medical College Delhi
Ishita D/o Pawan Gupta
Jhajjar

Selection in PGIMS Rohtak
Disha D/o Sudhir
Koyalpur

Selection in PGIMS Rohtak
Sakshi D/o Devender
Kheri Khummar

Selection in ESIC Faridabad
Anjali D/o Vikash
Chaamanpura

Selection in Medical College Faridabad
Vaibhav S/o Amit
Jhajjar

Selection in AIIMS Jodhpur
Khushi D/o Pawan
Dhakla

Selection in PGIMS Rohtak
Charu D/o Satish
Masudpur

Selection in PGIMS Rohtak
Yash S/o Om Prakash
Jhajjar

Vibhoo S/o Sanjeev
Jhajjar

Vedika D/o Tarun
Jhajjar

Lavanya D/o Jitender
Jhajjar

Jyoti D/o Vedprakash
Dujana

Hunny D/o Ramesh
Imlota

Komal D/o Dalbir
Jhajjar

Nidhi D/o Parambir
Silana

Yogita D/o Surender
Jhajjar

Best Residential School – Where Excellence Lives

Separate Hostels for Boys & Girls

- Fully safe and supervised hostel facilities
- Separate hostels for boys and girls
- 24×7 security & trained wardens
- Hygienic, nutritious and delicious meals
- High-speed internet & study-friendly spaces
- Cultural inclusivity and student care support

Congratulations
NDA Recommended 2026

Rakshit S/o Vikas Sharma
Jhajjar

OUR PROUD NDA ACHIEVERS | सेना में अफ़सर बनने के सपने को पूरा कर रहा है संस्कारम ।

Rahul S/o Jitender
Beri

Lakshay S/o Ajay
Silana

Parikshit S/o Shiv
Jhajjar

Aman S/o Jai Singh
Birohar

Jivesh S/o Sonu
Bhaproda

Dinesh S/o Sanjay
Bhaproda

Shubham S/o Manoj
Mangawas

Sahil S/o Sandeep
Siwana

Akshay S/o Ramavtar
Jhajjar

Sahil S/o Vijay
Bahadurgarh

Chirag S/o Rambir
Vill : Chimni

Lekhdeep S/o Hardeep
Vill : Rewari Khera

Rakshit S/o Vikas
Jhajjar

Yash S/o Jagbir
Beri

Sakshi D/o Naveen
Barhana

Muskan D/o Govind
Koelpur

Jaikumar S/o Pawan
Marout

Anuj S/o Vikash
Jhajjar

Shubham S/o Ranbir
Kheri Khummar

Shubham S/o Kailash
Dubaldhan

Daivik S/o Yogesh
Jhajjar

Integrated Classroom Programme for Selection in IIT-JEE, NEET, NDA, MNS, SSC, CUET, CLAT, CA, CS, ICMAI, UPSC, Banking Exams, Olympiads, KVPY, and other competitive exams.

JHAJJAR CAMPUS : 8222889860,62
NH.334B, Main Dadri Road, Khatiwas, Jhajjar (Haryana)

PATAUDA CAMPUS : 9053007801,02
NH.352, Patauda, Near Kulana, Jhajjar (Haryana)

खबर संक्षेप

फंदा लगाने से महिला की मौत

बहादुरगढ़। छोटूराम नगर में फंदा लगाने से एक महिला की मौत हो गई। मानसिक परेशानी से तंग आकर महिला द्वारा यह कदम उठाए जाने की बात सामने आई है। शनिवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा दिया। मृतका की पहचान करीब 25 वर्षीय गुड़िया के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार, प्रवासी मूल की गुड़िया परिवार सहित यहां छोटूराम नगर में रह रही थी और दो बच्चों की मां थी। शुक्रवार को वह फंदे पर लटकी देखी गई। परिजनों ने देखा तो संभाला लेकिन देर हो चुकी थी। इसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। मृतका के मायके पक्ष को सूचना दी गई।

सीएम को गुमराह कर रहे अधिकारी

बहादुरगढ़। भाजपा नेता जसबीर सैनी ने एक बार फिर अधिकारियों की कार्यशैली पर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि भू-माफियाओं द्वारा बहादुरगढ़ में धड़ल्ले से अवैध कॉलोनियां काटी जा रही हैं। बालौर गांव के रकबे में काटी जा रही अवैध कॉलोनी का मुद्दा विधानसभा में भी गूंजा था। बार-बार शिकायत भी दी गई। लेकिन प्रशासन की कार्रवाई खानापूर्ति तक सीमित है। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ अधिकारी सरकार के पास गलत रिपोर्ट भेज रहे हैं। जल्द ही इन भ्रष्ट अधिकारियों की सूची मुख्यमंत्री को दी जाएगी।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला लापता

बहादुरगढ़। शहर की निवासी एक महिला संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई है। परिजन तमाम संभावित ठिकानों पर उसको तलाश चुके हैं लेकिन दो दिन बीत जाने के बाद भी उसका कुछ अता-पता नहीं है। पुराना नजफगढ़ रोड स्थित एक बस्ती के निवासी धर्मबीर सिंह का कहना है कि उसकी पत्नी करीब 28 वर्षीय नेहा पांच मार्च को घर से बाहर गई थी लेकिन वापस नहीं आई। काफी देर तक नहीं लौटी तो तलाश शुरू की लेकिन कुछ सुराग नहीं लगा। उधर, सिटी थाने से जांच अधिकारी सोनू का कहना है कि गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। महिला को तलाशने के प्रयास किए जा रहे हैं।

कंपनी के बाहर से बाइक चोरी

बहादुरगढ़। एमआईई पार्ट-ए में स्थित एक कंपनी के बाहर से बाइक चोरी हो गई। वाहन मालिक ने पुलिस को शिकायत दे दी है। सिसाना गांव के निवासी कर्मपाल का कहना है कि उसने एमआईई में पानी का प्लांट लगा रखा है। वह बाइक लेकर एमआईई में स्थित एक फैक्ट्री में अपने दोस्त संदीप के पास गया था। फैक्ट्री के बाहर बाइक खड़ी कर दी। थोड़ी देर बाद बाहर निकला तो बाइक नहीं मिली। अपने स्तर पर जांच की लेकिन कुछ पता नहीं चला। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया है। पुलिस तलाशने में मदद करे। इस शिकायत पर एमआईई चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जटिया कॉलोनी में सीवरेज व्यवस्था बदहाल

बहादुरगढ़। जटिया कॉलोनी में एक बार फिर सीवरेज व्यवस्था बदहाल हो गई है। स्थानीय निवासी फुला देवी, यशपाल हिंदुस्तानी, विनोद कुमार, धर्मवती, वयजंती, नीलम, सुषमा, अंशु व ऋतु आदि ने सीवरेज ब्लॉक और ओवरफ्लो की समस्या के समाधान की मांग की। उन्होंने कहा कि गंदा पानी गलियों में जमा होने से लोगों को आवागमन में दिक्कत हो रही है। बीमारियों फैलने का खतरा भी मंडरा रहा है।

एचपीसीएल ने बुपनिया में की मॉक ड्रिल

बहादुरगढ़। हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने गांव बुपनिया लेवल-3 ऑफ-साइट मॉक ड्रिल का आयोजन किया। इस दौरान बादली थाना पुलिस के अधिकारी, स्टेशन फायर ऑफिसर, सीएमओ कार्यालय के प्रतिनिधि तथा गांव बुपनिया के सरपंच समेत ग्रामीण भी उपस्थित रहे। स्थानीय ग्रामीणों को रमनमंडी-बहादुरगढ़ पाइप लाइन से संबंधित आपात स्थितियों में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों की जानकारी दी गई। जिला स्तरीय विभागों के बीच आपदा प्रबंधन और समन्वय की तैयारियों का भी परीक्षण किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष: महिला सशक्तीकरण का मजबूत उदाहरण बनी नारंग और कपूर

सफल प्रिंसिपल रुपाक्षी और उद्यमी रिंकी की कहानियों से महिलाएं ले रहीं प्रेरणा

विद्यार्थियों ने पोस्टर मेकिंग गतिविधि के माध्यम से स्वच्छ पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से संबंधित संदेश प्रस्तुत किए

दोनों महिलाओं की उपलब्धियां यह दर्शाती हैं कि यदि आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय हो तो महिलाएं हर क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकती हैं

रवींद्र राठी ▶▶ बहादुरगढ़

विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अपने हौसले और मेहनत से सफलता हासिल करने वाली महिलाओं की कहानियां समाज के लिए प्रेरणा बन रही हैं। शारीरिक अक्षमता के बावजूद स्कूल की प्रिंसिपल के रूप में जिम्मेदारी निभा रहीं रूपक्षी नारंग और स्टार्टअप के माध्यम से लोगों को रोजगार दे रहीं उद्यमी रिंकी कपूर की सफलता की कहानी आज कई महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गई है।

बता दें कि संत कॉलोनी निवासी रूपक्षी नारंग शारीरिक चुनौतियों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। बीमारी के कारण उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर कार्य करते हुए विजया स्कूल की प्रिंसिपल के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभा रही हैं।

उनका संघर्ष और समर्पण यह संदेश देता है कि मजबूत इरादों के सामने परिस्थितियां भी छोटी पड़ जाती हैं। वहीं, मोहन नगर निवासी रिंकी कपूर ने भी अपने सपनों को साकार करने के लिए सुरक्षित नौकरी छोड़ने का साहस दिखाया। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद उन्होंने 12 लाख रुपये सालाना पैकेज वाली नौकरी छोड़कर एलईडी लाइट निर्माण का स्टार्टअप शुरू किया।

शुरुआती दौर में सीमित संसाधनों के साथ शुरू किया गया यह कारोबार आज कई लोगों को रोजगार दे रहा है और उनके उत्पाद बाजार में अपनी पहचान बना चुके हैं। इन दोनों महिलाओं की उपलब्धियां यह दर्शाती हैं कि यदि आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय हो तो महिलाएं हर क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकती हैं। उनकी कहानियां समाज में महिला सशक्तिकरण का मजबूत उदाहरण बनकर उभर रही हैं और अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

शारीरिक अक्षमता भी रुपाक्षी के आड़े नहीं आई

कठिन स्वास्थ्य परिस्थितियों के बावजूद रुपाक्षी नारंग कई करीब 10 सालों से विजया स्कूल की प्रिंसिपल के रूप में अपने दायित्व को पूरी लगन और जिम्मेदारी के साथ निभा रही हैं। वर्ष 1980 में संत कॉलोनी में अर्जुन किंद्रा और शशि किंद्रा के घर जन्मी रुपाक्षी बचपन से ही बहुमुखी प्रतिभा की धनी रही हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेल और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भी उनका प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। बैडमिंटन और क्रिकेट खेलने के साथ वे बेस्ट स्पीकर भी रह चुकी हैं। वर्ष 2007 में स्कूल से घर लौटने पर उन्हें अचानक स्वास्थ्य संबंधी परेशानी महसूस हुई। चिकित्सकों ने प्रारंभ में कैल्शियम की कमी बताई, लेकिन दो महीने बाद वह अचानक गिर गईं। इसके बावजूद करीब चार साल तक वह बिना सहारे के चलती रहीं। वर्ष 2011 में उन्हें फिर से मल्टीपल स्किल लॉस का अटैक आया, जिससे उनकी शारीरिक स्थिति प्रभावित हुई। हालांकि इस कठिन बीमारी ने उनके हौसले को कमजोर नहीं किया। उन्होंने अपने आपको संभाला और शिक्षा के क्षेत्र में पूरी निष्ठा के साथ काम करती रहीं। रुपाक्षी ने एनवायरमेंटल साइंस में एमएससी करने के बाद इंग्लिश और साइकोलॉजी में एमए किया तथा स्पेशल एजुकेशन में डिप्लोमा भी हासिल किया। उनके इस संघर्ष में उनके पति पंकज नारंग ने भी हर कदम पर उनका साथ दिया। उनका बेटा दिव्य नारंग वर्तमान में बीबीए की पढ़ाई कर रहा है। रुपाक्षी नारंग की कहानी यह साबित करती है कि मजबूत इरादों के सामने शारीरिक चुनौतियां भी छोटी पड़ जाती हैं।

बहादुरगढ़। एक कार्यक्रम में प्रज्ञा सम्मान प्राप्त करती रुपाक्षी नारंग। फोटो : हरिभूमि

रिंकी ने स्वयं नौकरी छोड़ दूसरों को दिया रोजगार

शहर के मोहन नगर निवासी रिंकी कपूर ने साहस और मेहनत के दम पर महिला सशक्तिकरण की मिसाल पेश की है। करीब 12 लाख रुपये सालाना पैकेज वाली इंजीनियर की नौकरी छोड़कर उन्होंने एलईडी लाइट निर्माण का अपना स्टार्टअप शुरू किया, जो आज सफल कारोबार बन चुका है और करीब 20 लोगों को रोजगार भी दे रही है। रोहतक में जन्मी रिंकी कपूर ने मुरथल स्थित दीनबंधु छोटूराम यूनिवर्सिटी से इलेक्ट्रॉनिक्स में बीटेक की पढ़ाई की। इंजीनियरिंग पूरी करने के बाद उन्होंने कुंडली की एक फैक्ट्री में इंजीनियर के रूप में कई साल काम किया, लेकिन अपना स्टार्टअप शुरू करने के लिए उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी। करीब 6 वर्ष पहले रिंकी ने एलईडी लाइट निर्माण का काम शुरू किया। अपने उत्पादों को गलिट-अप नाम से पंजीकृत कराया। शुरुआती दौर में उन्होंने दो-तीन कर्मचारियों के साथ खुद लाइटों की असेंबलिंग की। धीरे-धीरे अपने कारोबार को आगे बढ़ाया। उन्होंने नांगलोई में फैक्ट्री लगाने के साथ ही बहादुरगढ़ में पुराना झज्जर रोड और नजफगढ़ रोड पर दो शोरूम भी खोल दिए। उनकी बनाई एलईडी लाइटें गुणवत्ता के मामले में कई बड़ी कंपनियों के उत्पादों को टक्कर दे रही हैं। पीडब्ल्यूडी बीएंडआर में भी उनका ब्रान्ड अप्रूवल हो चुका है। कई औद्योगिक संस्थानों द्वारा रिंकी को सम्मानित किया जा चुका है। उनके पति मुनीष कुमार एक निजी कंपनी में जॉब करते हैं। रिंकी कपूर की सफलता यह साबित करती है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत के बल पर कोई भी सपना हकीकत में बदला जा सकता है।

बहादुरगढ़। एक समारोह में अभिनेत्री ईशा देयोल के साथ रिंकी कपूर। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में शपथ लेते नवप्रवेशित विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

नर्सिंग विद्यार्थियों ने ली शपथ

बहादुरगढ़। शनिवार को नूना माजरा स्थित महाराजा अग्रसेन नर्सिंग कॉलेज में नवप्रवेशित बीएससी नर्सिंग एवं जीएनएम के 200 विद्यार्थियों के लिए भव्य शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। फिलहाल नर्सिंग कॉलेज में कुल लगभग 450 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। महाराजा अग्रसेन केदार नाथ गुप्ता मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम हॉल में दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. सुशील कुमार गुप्ता, डॉ. मीना सुभाष गुप्ता, राजेश गुप्ता, प्रेम गर्ग, त्रिलोकीनाथ, दर्वेश बंसल, संजय गुप्ता, राजकुमार गुप्ता और प्रदीप कुमार आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। इन सभी ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में नर्सों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को ईमानदारी, अनुशासन और सेवा भावना के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित किया। नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल ललिता भट्ट ने सभी नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नर्सिंग सेवा की शपथ दिलाई। उन्होंने विद्यार्थियों को नर्सिंग पेशे के महत्व, जिम्मेदारी और सेवा भावना के बारे में विस्तार से बताया। मेडिकल कॉलेज की डीन डॉ. पूनम अग्रवाल ने विद्यार्थियों को नर्सिंग जीवन की गरिमा और जिम्मेदारियों के बारे में बताया। इस अवसर पर मेडिकल सुप्रिटेंडेंट डॉ हर्ष राज नेहरा ने विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

प्रदीप व जतिन बने नेशनल चैंपियन

तमिलनाडु के सालेम में हुई अंडर-15 नेशनल कुश्ती चैंपियनशिप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

तमिल नाडु के सालेम में बीते दिनों हुई अंडर-15 नेशनल कुश्ती चैंपियनशिप में बुपनिया स्थित जयवीर अखाड़े के दो पहलवान छाए रहे। शारदार प्रदर्शन करते हुए प्रदीप व जतिन ने अपने भारवर्ग में गोल्ड मेडल जीतकर प्रदेश का नाम रोशन किया।

जीतकर लौटे विजेताओं का अखाड़े में कुश्ती प्रेमियों द्वारा जोरदार अभिनंदन किया गया। भारतीय कुश्ती संघ की ओर से चैंपियनशिप का आयोजन किया गया था, जिसमें देशभर के पहलवानों ने भाग लिया। जयवीर अखाड़े के जतिन पहलवान ने ग्रीकोरोमन के 85 किलोग्राम भारवर्ग में जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल पर कब्जा जमाया।

वहीं प्रदीप पहलवान ने 48 किलोग्राम भारवर्ग फ्री स्टाइल में जोरदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल जीता। प्रदीप मांडोठी तो जतिन रोहतक जिले के निंदाणा गांव से है। कोच जयवीर के मार्गदर्शन में लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। अखाड़ा संचालक जयवीर ने कहा कि दोनों बेहद प्रतिभाशाली हैं। आने वाले समय में विश्वस्तर पर देश का परचम लहराएंगे।

कोच मनु, नवीन, संजीत, सत्ते पहलवान, विजय खलीफा, खालसा, कृष्ण, भोलू, सुकिंदर लाठर, जलबीर, कुलदीप तथा पाटिल महाराष्ट्र आदि ने विजेताओं को बधाई तथा उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया।

बहादुरगढ़। कोच और कुश्ती प्रेमियों के साथ विजेता पहलवान। फोटो : हरिभूमि

विधायक ने किया सतीश नांदल का स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

राज्यसभा के निर्दलीय प्रत्याशी सतीश नांदल शनिवार को बहादुरगढ़ पहुंचे। यहां पहुंचने पर निर्दलीय विधायक राजेश जून के कार्यालय में उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। राजेश जून ने सभी दलों के विधायकों से सतीश नांदल के पक्ष में मतदान की अपील की। विधायक राजेश जून ने सतीश नांदल को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर उनका अभिनंदन किया और उन्हें राज्यसभा चुनाव के लिए शुभकामनाएं दीं।

इस दौरान मौजूद समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने भी उनका स्वागत किया। विधायक राजेश जून ने विश्वास के साथ कहा कि प्रदेश के तीनों निर्दलीय विधायकों के अलावा इनेलो, कांग्रेस और भाजपा के विधायक भी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर लोकतांत्रिक भावना के तहत सतीश नांदल के पक्ष में मतदान करेंगे।

विधायक राजेश जून ने कहा कि सतीश नांदल प्रदेश के एक शिक्षित, साफ-सुथरी छवि वाले और जनहित के मुद्दों को समझने वाले व्यक्ति हैं। ऐसे में उन्हें राज्यसभा भेजना हरियाणा के हित में होगा। राजेश जून ने कहा कि सभी विधायक दलगत राजनीति से ऊपर उठकर निर्दलीय प्रत्याशी सतीश नांदल के पक्ष में वोट देकर उन्हें राज्यसभा का सदस्य बनाएं।

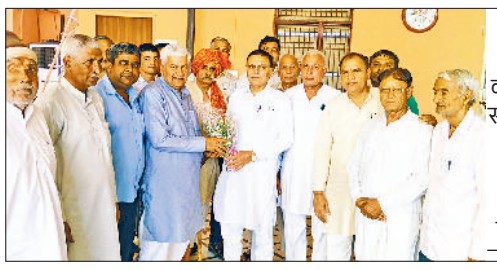

बहादुरगढ़। अपने कार्यालय पर सतीश नांदल का स्वागत करते विधायक राजेश जून।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में महिला स्टॉफ के साथ संस्था अध्यक्ष नवीन देशवाल।

स्पेशल स्कूल में कार्यरत महिलाओं को किया सम्मानित

बहादुरगढ़। नूना माजरा स्थित बाबा रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेशल एजुकेशन में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम हुआ। संस्थान में महिलाओं के योगदान, उनकी उपलब्धियों और समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा हुई। संस्थान की महिला शिक्षिकाओं एवं स्टाफ सदस्यों को उनके समर्पण और उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों ने भी महिला सशक्तिकरण से संबंधित अपने विचार व्यक्त किए। संस्था अध्यक्ष नवीन देशवाल व सोनू ने बताया कि महिलाओं का शिक्षा, समाज और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है।

सरकार से मेट्रो के ग्रीन कॉरिडोर को रोहद टोल तक विस्तार देने का किया अनुरोध

कोबी ने फिर की ड्राईपोर्ट तथा ट्रांसपोर्ट नगर बनाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

कॉन्फेडरेशन ऑफ बहादुरगढ़ इंडस्ट्रीज ने औद्योगिक जगत में उठाई गई अनेक मांगों को पूरा करने के लिए सरकार का आभार जताया है। साथ ही कोबी पदाधिकारियों ने कहा कि मेट्रो को रोहद तक विस्तार मिलना चाहिए। उन्होंने ड्राइपोर्ट की स्थापना और ट्रांसपोर्ट नगर बनाने की मांग भी उठाई। कोबी पदाधिकारियों ने शनिवार को गणपति धाम स्थित कार्यालय में इंटरेक्टिव सेशन का आयोजन किया। जिसमें उद्योग जगत के कल्याण को लेकर सार्थक चर्चा हुई।

बैठक में कोबी अध्यक्ष प्रवीण गर्ग, उपाध्यक्ष विपिन बजाज, महासचिव प्रदीप कौल, कोषाध्यक्ष अशोक मित्तल, सहसचिव सुरेंद्र वशिष्ठ, सरदार अमरीक सिंह, सुनील गर्ग व गणेश गुप्ता आदि ने बताया कि कोबी कर्मचारियों को स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधा दिलवाने के लिए प्रयासरत हैं। अभावग्रस्त बच्चों की शिक्षा के लिए मंथन के माध्यम से अभियान चला रहे हैं। प्रवीण गर्ग ने बताया कि कोबी ने शुरुआत में ही अनियमित औद्योगिक क्षेत्रों को वैध करने की मांग उठाई थी। आखिरकार यह प्रयास रंग लाया। सरकार ने इसके लिए पालिसी/पोर्टल बनाकर आवेदन लेने शुरू कर दिए हैं। बजट में इन क्षेत्रों के विकास के लिए 500 करोड़ का फंड भी एलोकेट किया है। उनके आवाज उठाने के बाद एमआईई में 35 करोड़ रुपए के काम हुए, पुराने औद्योगिक क्षेत्र में भी करीब 7 करोड़ के विकास कार्य हुए। हालांकि गुणवत्ता से वे संतुष्ट नहीं हैं। पुराने औद्योगिक एरिया में अतिक्रमण हटवाया गया। उन्होंने कहा कि ईएसआईसी अस्पताल भी बन गया और इसके जल्द चालू होने की उम्मीद। जिले में 6 डिस्पेंसरी में सुविधाएं भी बढ़वाई। यूएचवीबीएन में इंडस्ट्रियल हेल्पडेस्क बनवाया। नए बिजलीघर स्थापित हुए, जिस कारण विद्युत आपूर्ति सुधरी। विभिन्न समस्याओं पर प्रशासन से लगातार फॉलोअप कर रहे हैं। अशोक मित्तल ने कहा कि बजट को लेकर सुझाव दिए थे। सरकार घोषणा से ज्यादा क्रियान्वयन पर ध्यान दे। बजट में एमएसएमई, पुराने औद्योगिक क्षेत्र, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट समेत बजट बढ़ाया है। हालांकि प्रदेश में झज्जर को अपेक्षित एलोकेशन नहीं मिलता। विपिन बजाज ने कहा कि इकॉनमी की लड़ाई में इंडस्ट्री सैनिक की तरह लड़ती है। अपेक्षित आधारभूत विकास नहीं हुआ है।

बहादुरगढ़। बैठक में कोबी की उपलब्धियों की जानकारी देते पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

कमेटियों की मैम्बर बनी कोबी

रेडक्रॉस की सीएसआर कमेटी की कोबी भी मैम्बर है। इसके माध्यम से फ्री हैल्थ चैकअप कैम्प लगवाने शुरू किए। प्रदेश में 12 एम्बुलेंस आएंगी, इनमें से बहादुरगढ़ को भी मिलेगी। जीएसटी रिड्रेसल कमेटी की भी कोबी सदस्य है। कैम्प लगाकर पुराने विवाद निपटवाए। सिंगल विंडो उपलब्ध करवाई।

खबर संक्षेप

कार सवारों ने रास्ता रोकर बाइक सवार पर हमला किया

बहादुरगढ़। गांव खेड़ीट के निवासी एक व्यक्ति पर कार सवार चार लोगों ने रास्ता रोककर हमला कर दिया। राहगीरों ने पीड़ित को बचाया। इसके बाद हमलावर धमकी देकर भाग गए। हमले की वजह स्पष्ट नहीं है। बादली थाना पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। वारदात सुरेश के साथ हुई है। सुरेश का कहना है कि वह बाइक पर सवार होकर सुरहा किलोई से अपने घर जा रहा था। जब अपने गांव की तरफ एक ईंट भट्ठे के पास पहुंचा तो सामने से ओरा गाड़ी आई। गाड़ी ने रास्ता रोक लिया और उसमें से चार युवक बाहर निकले। चारों उसके गांव के थे। उन्होंने बाइक से उतारकर बेरहमी से मारपीट की। इसी दौरान वहां से गुजर रहे एक गाड़ी चालक ने मेरा बीच बचाव कराया। फिर हमलावर धमकी देकर भाग गए। वह राहगीर ही मुझे अस्पताल में लेकर गया। जिसके बाद मुझे रेफर कर दिया गया। उधर, सूचना पाकर पुलिस पीजीआई पहुंची और बयान लिए। बयान के आधार पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। तीन आरोपियों की पहचान हो गई है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही मामले को सुलझाया जाएगा।

माइनर में चौथे दिन बरामद हुआ चंदन का शव

बहादुरगढ़। दुल्हेंडी की सायं एनसीआर माइनर में डूबे प्रवासी चंदन का शव चौथे दिन शनिवार को बरामद हो गया। पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में भिजवा दिया। परिजनों के बयान के बाद पुलिस पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराएगी। मृतक की पहचान करीब 18 वर्षीय चंदन के रूप में हुई है। बिहार मूल का चंदन यहां रोहद में रहता था और एक प्लाईवुड कंपनी में काम करता था। बुधवार की शाम को वह अपने दोस्तों के साथ एनसीआर माइनर में नहाने के लिए गया था। इसी दौरान पांव फिसलने से वह डूब गया। सूचना पाकर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सर्च अभियान चलाया। अगले दिन वीरवार की सुबह गोताखोरों ने मोर्चा संभाला। तब से पुलिस व गोताखोर टीम लगातार उसके शव को तलाश रही थी लेकिन सफलता नहीं मिली। आखिरकार शनिवार की सुबह घटनास्थल से करीब दो किलोमीटर दूर एक पुल के नीचे चंदन का शव अटका पाया गया। माइनर से बाहर निकालकर शव अस्पताल में भिजवाया गया है। जांच अधिकारी देवेंद्र सिंह का कहना है कि कड़ी मशक्कत के बाद शव तलाश लिया गया है। परिजनों के बयान के आधार पर मामले में आगामी कार्रवाई होगी।

परनाला में हुआ नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का स्वागत

बहादुरगढ़। गांव परनाला-हसनपुर में सर छोटूराम धर्मशाला सोसायटी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का जोरदार स्वागत किया गया। ग्रामीणों ने प्रधान बिजेंद्र जून, उपप्रधान प्रदीप लडरावन व सहसचिव प्रवीण छिल्लर समेत अन्य का फूल-मालाएं पहनाकर और शुभकामनाएं देकर सम्मान किया। कार्यक्रम में राठी खाप के प्रधान रणबीर राठी, सरपंच एसोसिएशन के प्रधान अशोक राठी, जितेंद्र बामडौली, मोहन खैरपुर, सरपंच मनीष, अनिल, सरपंच मोहित, सरपंच सुमित मुकंदपुर, पप्पू कुलासी, सुखबीर, जगबीर, ओमप्रकाश और राजीव आदि ने नवनिर्वाचित टीम को बधाई देते हुए समाजहित में मिलकर काम करने की उम्मीद जताई।

अब तक नहीं मिली दोनों छात्राएं

बहादुरगढ़। शहर के एक राजकीय स्कूल की दो लापता छात्राओं का तीसरे दिन भी सुराग नहीं लगा। पुलिस 11वीं कक्षा की छात्राओं की तलाश में संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। दोनों छात्राएं वीरवार को सरकारी स्कूल से एक साथ निकली थीं। एक को लाइनपार तथा दूसरी को पटेल नगर जाना था लेकिन देर शाम तक दोनों घर नहीं पहुंचीं। चिंतित परिजनों ने उनकी तलाश शुरु की और नहीं मिली तो पुलिस को शिकायत दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंची और तलाश शुरू की। शनिवार शाम तक दोनों छात्राओं का कोई सुराग नहीं लग सका। छात्राओं के न मिलने से उनके परिजन चिंतित हैं तो वहीं पुलिस की भागदौड़ भी बढ़ी हुई है।

मासूम बच्ची को परिजनों से मिलाकर दिखाई इंसानीयत

बहादुरगढ़। शहर में बीती रात कुछ विद्यार्थियों और उनके शिक्षक ने जिम्मेदारी तथा इंसानीयत की मिसाल पेश की। उन्होंने सड़क पर भटक रही तीन वर्षीय मासूम बच्ची को न केवल संभाला, बल्कि जिम्मेदारी का परिचय देते हुए उसे उसके परिजनों से मिलवाया। बच्ची को सकुशल पाकर परिजनों ने राहत राहत की सांस ली। दरअसल, दिल्ली पुलिस में कार्यरत अजय ग्रेवाल समाज सेवा के तहत समय निकालकर बच्चों को निःशुल्क कोचिंग देते हैं। बीती रात करीब साढ़े दस बजे क्लास समाप्त होने के बाद विद्यार्थी बाहर निकले तो उनकी नजर झज्जर रोड पर आईटीआई के पास भटक रही एक छोटी बच्ची पर पड़ी। छात्र दिव्य जैन और विक्की तुरंत बच्ची के पास पहुंचे और उसे गोद में उठाकर संभाला।

पंचकूला में पेड़ों की कटाई पर जताई चिंता

बहादुरगढ़। पंचकूला जिले के बरवाला क्षेत्र में स्थित आसरेवाली गांव के जंगल में करीब 1500 खैर के पेड़ों की कथित अवैध कटाई को लेकर पर्यावरण संरक्षण समिति ने गंभीर चिंता जताई है। समिति ने इसे पर्यावरण के लिए बड़ा नुकसान बताते हुए मामले की सीबीआई जांच की मांग की है। समिति के प्रवक्ता जीवन सिंह और सदस्य सतवीर सिंह ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में पेड़ों की अवैध कटाई से पर्यावरण प्रेमियों और प्रदेश की आम जनता में रोष है। उनका कहना है कि घटना के काफी समय बीत जाने के बाद भी न तो लकड़ी बरामद हुई है और न ही इस मामले में कोई आरोपी पकड़ा गया है। समिति ने आरोप लगाया कि सरकार की ओर से कार्रवाई के नाम पर केवल उस कर्मचारी को निलंबित किया गया है, जिसने सबूतों के साथ पेड़ों की कटाई की सूचना दी थी। उन्होंने कहा कि भारतीय वन अधिनियम 1927 के तहत सामान्य नागरिक को भी वन अपराध की सूचना देने का अधिकार है, जबकि यहां सूचना देने वाले कर्मचारी के खिलाफ ही कार्रवाई कर दी गई। प्रवक्ताओं ने बताया कि बाजार में खैर की लकड़ी का भाव करीब 20 हजार रुपये प्रति क्विंटल है और एक पेड़ से लगभग 25 क्विंटल तक लकड़ी निकल सकती है।

आरोपी पुलिसकर्मी की गिरफ्तारी की मांग, जमकर की नारेबाजी

चिकित्सकों की हड़ताल के कारण मरीज बेहाल, ओपीडी रही बंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शहर घरौंडा स्थित सरकारी अस्पताल में थाना प्रभारी द्वारा डॉक्टर के साथ बदसलूकी करने मामले में शनिवार को जिले के सरकारी चिकित्सकों ने रोष स्वरूप ओपीडी का बहिष्कार किया। स्थानीय नागरिक अस्पताल के सभी चिकित्सक एमएस कार्यालय में बैठे रहे, जिस कारण मरीजों को परेशानी का सामना करना पड़ा। हालांकि एमरजेंसी, महिला एंव प्रसूति विभाग व पोस्टमार्टम सेवाएं चालू रहीं। यूनियन की जिला प्रधान डॉक्टर आकृति हुड्डा ने बताया कि घरौंडा के नागरिक अस्पताल में होली पर्व के चले बीते चार मार्च की रात जब चिकित्सक एमरजेंसी सेवाओं में तैनात थे तो उस दौरान कुछ लोग वहां आकर लड़ाई झगड़ा करने लगे। स्थिति जब गंभीर हुई तो वहां के चिकित्सक ने पुलिस को फोन कर सहायता मांगी। बार-बार फोन करने के बाद जब थाना प्रभारी अस्पताल पहुंचे तो उन्होंने न केवल चिकित्सक के साथ बदसलूकी करते हुए थप्पड़ मारे बल्कि उन्हें पकड़ कर थाने भी ले गए। करीब चालीस मिनट बाद चिकित्सक को छोड़ तो दिया गया लेकिन उनकी एफआईआर अभी तक दर्ज नहीं की गई। डॉक्टर आकृति हुड्डा ने कहा कि जब एक फर्स्ट क्लास ऑफिसर की एफआईआर करीब तीन दिन बीतने के बावजूद दर्ज नहीं की गई तो सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम जन को इस प्रकार की शिकायत दर्ज कराने में कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता होगा। उन्होंने कहा कि वे चिकित्सक के साथ की गई बदसलूकी के विरोध में ओपीडी सेवाओं का बहिष्कार कर रहे हैं। यदि संबंधित चिकित्सक की शिकायत दर्ज नहीं की गई तो वे सोमवार को हड़ताल करने पर मजबूर होंगे। इस दौरान चिकित्सकों ने अस्पताल के गेट नंबर एक के समक्ष खड़े होकर अपना विरोध भी जताया। इस मौके पर डॉक्टर सूर्यप्रताप, डॉक्टर जयप्रकाश, डॉक्टर अमित, डॉक्टर भूपेश, डॉक्टर शीतल वर्मा, डॉक्टर प्रशांत, डॉक्टर रितेश, नर्सिंग ऑफिसर कविता गुलिया सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

झज्जर। अस्पताल के मुख्य गेट पर खड़े होकर घरौंडा में हुई घटना का विरोध जताते हुए चिकित्सक। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। अस्पताल में ओपीडी सेवाएं बंद होने के कारण सुनसान पड़ी गैलरी।

मरीजों को करना पड़ा परेशानी का सामना

चिकित्सकों द्वारा ओपीडी का बहिष्कार किए जाने के चलते वहां आने वाले लोगों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा। इस दौरान ओपीडी स्लिप वाली खिड़की भी बंद रही। ऐसे में गांवों से अपना उपचार कराने वाले लोगों के चेहरे पर मायूसी नजर आई। खाजपुर से पहुंची शकुंतला देवी ने बताया कि वह आंखों की जांच कराने आई थी लेकिन जब यहां आकर ओपीडी बंद होने का पता चला तो अब उसे सोमवार को आना पड़ेगा। खातीवास से अपने बच्चे गौरव के चर्मरोग का उपचार कराने पहुंची शीतल ने बताया कि उसके बच्चे को रात से एलर्जी की शिकायत है। उसके शरीर में खुजली चल रही है। अब यहां आकर ओपीडी बंद होने का पता चला है। ऐसे में उसके बेटे के लिए दो निकालना मुश्किल हो जाएगा। इसी प्रकार मुंडाहेड़ा गांव निवासी अममेश ने बताया कि उसका संस्कृत प्राध्यापक के रूप में चयन हुआ है। वह इसलिए में शुक्रवार को मेडिकल कराने आया था। मेडिकल संबंधी प्रक्रिया भी पूरी हो चुकी थी लेकिन चिकित्सक द्वारा लगाई गई मुहर के स्थान पर एक जगह हस्ताक्षर करने शेष रह गए। ऐसे में वह फिर से यहां पहुंचा है लेकिन अब ओपीडी बंद होने के कारण उसके मेडिकल दस्तावेजों पर चिकित्सक के हस्ताक्षर नहीं हो पाएंगे। अब उसे सोमवार को ही आना पड़ेगा।

बहादुरगढ़। हड़ताल के दौरान विरोध जाहिर करते चिकित्सक।

ओपीडी बंद रहने से मरीजों को हुई परेशानी

बहादुरगढ़। करनाल के घरौंडा में हुए चिकित्सक-एसएचओ विवाद के बाद प्रदेशभर के डॉक्टरों में रोष है। एसएचओ के खिलाफ ऑन ड्यूटी डॉक्टर के साथ मारपीट करने के आरोप लगाते हुए प्रदेशभर के चिकित्सक हड़ताल पर चले गए। हड़ताल का असर बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में भी देखने को मिला। शनिवार को यहां अधिकांश डॉक्टर हड़ताल पर रहे। तमाम विभागों में डॉक्टरों की कुर्सियां खाली रहीं। ओपीडी छोड़कर डॉक्टरों ने इकट्ठे होकर नाराजगी जताई और आरोपी एसएचओ के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई। डॉ. जसबीर ने कहा कि एचसीएमएस झज्जर बैनर तले यह हड़ताल की गई है। फिलहाल एक दिन की हड़ताल है। यदि सोमवार तक आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं हुई तो अन्य सेवाएं भी बंद की जा सकती हैं। डॉक्टरों ने कहा कि काम के दौरान अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों में चिकित्सकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। उधर, दूसरी तरफ ओपीडी बंद रहने के कारण मरीजों को परेशानी झेलनी पड़ी। वे इधर-उधर भटकते नजर आए। ईश्वर राठी, प्रीति आदि ने कहा कि वे ईलाज के लिए आए हैं लेकिन यहां आकर पता चला कि हड़ताल है। ओपीडी चालू नहीं है। इसलिए अब वापस जाना पड़ रहा है। अस्पताल में आमतौर पर करीब 1400 ओपीडी रोजाना हो जाती है। शनिवार को हड़ताल के कारण मरीज कम आए और जो आए, उन्हें भी ईलाज नहीं मिल सका। हालांकि इमरजेंसी में सेवाएं सुचारू रहीं।

बहादुरगढ़। हड़ताल के कारण खाली पड़ा ओपीडी क्षेत्र। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। हड़ताल के चलते डॉक्टरों की खाली कुर्सी।

निजी अस्पताल के सामने से बाइक चोरी

झज्जर। शहर के सिलानी गेट क्षेत्र में एक निजी अस्पताल के सामने खड़ी कर्मचारी की बाइक चोरी हो गई। पुलिस को दी शिकायत में देव नगर कालोनी निवासी ललित ने बताया कि वह सिलानी गेट स्थित एक निजी अस्पताल में नौकरी करता है। वह बीती शुक्रवार की शाम अपनी बाइक पर अस्पताल में ड्यूटी करने आया था। उसने अपनी बाइक अस्पताल के बाहर गेट के सामने खड़ी की थी। वीरवार की सुबह सात बजे जब वह अस्पताल से बाहर आया तो उसकी बाइक वहां से चोरी हो चुकी थी। ललित के अनुसार उसकी बाइक से संबंधित दस्तावेज व उसका ड्राईविंग लाइसेंस भी बाइक के साथ चोरी हो गए। उसने अपने स्तर पर बाइक की तलाश भी लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। पुलिस द्वारा शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

झज्जर। स्वास्थ्य जांच शिविर में जांच करते हुए चिकित्सक।

शिविर में लोगों ने करवाई स्वास्थ्य जांच

झज्जर। वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज रिसर्च एंड हास्पिटल गिरावड़ द्वारा शनिवार को क्षेत्र के गांव चमनपुरा में एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अस्पताल के मेडिसिन विभाग, सर्जरी, नेत्र रोग, ईएनटी, हड्डी रोग, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग के चिकित्सकों ने सेवाएं दी। इस दौरान शिविर में पहुंचे सैंकड़ों लोगों की स्वास्थ्य जांच की गई तथा जरुरतमंद लोगों में निःशुल्क दवाइयां भी विरतित की गई। कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉक्टर चरण सिंह ने बताया कि संस्थान के संस्थापकक डॉक्टर नरेंद्र सिंह के नेतृतव में आयोजित इस शिविर के दौरान लोगों को स्वास्थ्य की उचित देखभाल के लिए आवश्यक परामर्श भी दिए गए।

अधिवक्ता की गला रेतकर हत्या करने के मामले में महिला सहित तीन आरोपी काबू

- आरोपी हिमांशु तीन दिन के पुलिस रिमांड पर, दो मोबाइल और दो चाकू बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

फाग पर्व के दिन माता गेट क्षेत्र में अधिवक्ता की गला रेतकर हत्या करने मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम द्वारा एक महिला सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। शहर थाना प्रभारी बलदेव ने बताया कि पुलिस को दी शिकायत में मृतक के पिता जगत सिंह चाहर ने बताया था कि वह सिलानी जालिम का रहने वाला है। उसका छोटा बेटा देवराज सिंह चाहर स्थानीय कोट में वकील का काम करता था और शहर के माता गेट क्षेत्र में एक महिला के साथ रहता है। बुधवार की रात करीब दस उसके पास उक्त महिला का फोन आया जिसने बताया कि देवराज को तेज धार हथियार से गले में चोटें मारी गई हैं, उसे कुलताना गांव निवासी हिमांशु बुलाकर ले गया था।

अब देवराज को रोहतक पीजीआई लेकर जा रहे हैं। जगत सिंह चाहर के अनुसार सूचना पाकर जब वह रोहतक पीजीआई पहुंचा तो उसे पता चला कि रोहतक पीजीआई में उसके पुत्र देवराज की मौत हो चुकी है। जगत सिंह चाहर ने आरोप लगाया कि उसके पुत्र की हत्या हिमांशु निवासी कुलताना ने अन्य व्यक्तियों के साथ साजिश रचकर की है। उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। उन्होंने बताया कि शिकायत के आधार पर कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी हिमांशु निवासी कुलताना जिला रोहतक को गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ में सामने आया कि हिमांशु ने देवराज को किसी केस के बहाने बुलाया था और उसने अचानक चाकू निकालकर देवराज के गले पर हमला कर दिया। गंभीर चोट लगने से देवराज की हालत बिगड़ गई और बाद में उसकी मौत हो गई। पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि मृतक देवराज के खेत को बेचकर मिलने वाली रकम के लालच में आरोपियों ने इस वारदात को अंजाम दिया। मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी के सहयोगी आशीष निवासी गुभाना और एक महिला को भी गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों के कब्जे से दो मोबाइल व दो चाकू बरामद किए गए है। पकड़े गए आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी हिमांशु को तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है। जबकि दो अन्य आरोपियों को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

झज्जर। पकड़े गए आरोपी पुलिस टीम के साथ। फोटो : हरिभूमि

साइबर ठगी गिरोह के पांच सदस्य गिरफ्तार एक न्यायिक हिरासत में, चार रिमांड पर

- 22 मोबाइल, तीन लैपटॉप और बारकोड किए बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

साइबर क्राइम की एक टीम ने टेलीग्राम के माध्यम से लोगों को निवेश के नाम पर ठगी करने मामले में कार्रवाई करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों के कब्जे से 22 मोबाइल, तीन लैपटॉप और कई बारकोड बरामद किए गए हैं।

साइबर क्राइम थाना प्रभारी निरीक्षक सोमबीर ने बताया कि झज्जर निवासी एक व्यक्ति ने शिकायत दर्ज कराई थी कि अगस्त 2025 में वह टेलीग्राम पर एक ग्रुप से जुड़ा था। उस ग्रुप में निवेश करने पर मोटा मुनाफा मिलने का दावा किया जा रहा था। शिकायतकर्ता ने बताया कि ग्रुप में दिए गए निर्देशों के अनुसार उसने एक व्हाट्सएप ग्रुप भी जॉइन कर लिया। वहां उसे अलग-अलग योजनाओं में निवेश करने के लिए कहा गया और शुरुआती दौर में उसे कुछ मुनाफा भी दिया गया। उसका भरोसा बढ़ गया। आरोपियों ने उसे अलग-अलग बैंक खातों में लगातार पैसे जमा करवाने के लिए कहा। जब उसने निवेश करने से मना कर दिया और अपने पैसे वापस निकालने की बात कही, तो आरोपियों ने अलग-अलग तरह के चार्ज और फीस बताकर उससे और पैसे मांगने शुरू कर दिए। तभी उसे शक हुआ कि उसके साथ साइबर फ्रॉड हो रहा है। उन्होंने बताया कि शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए उप निरीक्षक विनीत कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने पांच आरोपियों पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान किस्मत निवासी जिला भिवानी, राहुल निवासी जिला जींद, राहुल निवासी लेबर कॉलोनी हिसार, मुकुल निवासी बिजनौर और सूरज निवासी चंडीगढ़ के रूप में हुई है। आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से राहुल निवासी जींद को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है, चार आरोपियों को पूछताछ के लिए तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

झज्जर। पकड़े गए आरोपी पुलिस टीम के साथ। फोटो :हरिभूमि

जिला स्तरीय यूथ रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर में गंगा संस्थान के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट

झज्जर। गंगा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट कबलाना के विद्यार्थियों ने जिला स्तरीय यूथ रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संस्थान का गौरव बढ़ाया है। फैकल्टी कोर्डिनेटर डॉक्टर अंकिता सैनी ने बताया कि संस्थान के सात विद्यार्थियों ने बहादुरगढ़ के वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय जिला स्तरीय यूथ रेड क्रॉस प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। शिविर के दौरान युवाओं को सामाजिक मुद्दों, नशा मुक्ति, सड़क सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों पर जागरुक किया गया। शिविर में आयोजित प्रतियोगिताओं में संस्थान के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। बीटेक सीएसई -द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा नैंसी ने एक्सटेम्पोर स्पीच प्रतियोगिता तथा उज्ज्वल कुमार गर्ग और हिमांशु कुमार सिंह ने क्विज प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल किया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

एसटीएफ ने 250 ग्राम चरस सहित एक आरोपी पकड़ा

झज्जर। एसटीएफ की एक टीम द्वारा साल्हावास क्षेत्र में मादक पदार्थ चरस सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। एसटीएफ प्रभारी उपनिरीक्षक राजेश कुमार ने बताया कि पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली कि जय भगवान निवासी अंबोली जिला झज्जर मादक पदार्थ बेचने का अवैध धंधा करता है। वह मादक पदार्थ बेचने की फिराक में अंबोली बिठला रोड पर खड़ा है। जिस पर कार्रवाई करते हुए उप निरीक्षक मोहित कुमार की पुलिस टीम संदेह के आधार पर एक व्यक्ति पकड़ा। पकड़े गए व्यक्ति की नियमानुसार तलाशी लेने पर उसके कब्जे से मादक पदार्थ चरस बरामद हुआ। जिसका वजन करने पर 250 ग्राम पाया गया। आरोपी की पहचान जयभगवान निवासी अंबोली के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार मामला दर्ज करते हुए आगामी कार्यवाई अमल में लाई गई है।

झज्जर। शिक्षिकाओं के साथ कार्यक्रम में उपस्थित प्राचार्या गीता गाबा। फोटो : हरिभूमि

महिला सशक्तिकरण पर किया शिक्षिकाओं को जागरुक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

आरईडी विद्यालय में शनिवार को महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्या गीता गाबा ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाएं समाज की रीढ़ होती हैं। वे एक बेटी, बहन, मां, पत्नी और एक कुशल नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाती हैं। महिलाओं ने शिक्षा, विज्ञान, खेल, राजनीति, रक्षा और व्यापार जैसे सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण का अर्थ है उन्हें शिक्षा, रोजगार, स्वच्छता, स्वास्थ्य सुविधाएं और निर्णय लेने की स्वतंत्रता देना है। जब महिलाएं शिक्षित होंगी और आत्मनिर्भर बनेंगी, तभी वे समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। उन्होंने उपस्थित शिक्षिकाओं से आग्रह किया कि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरुक रहें और समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा की मांग करें।

विद्यार्थियों के लिए पीटीएम आयोजित

झज्जर। हिमालय हाई स्कूल में शनिवार को पीटीएम का आयोजन किया गया। मीटिंग के दौरान बड़ी संख्या में अभिभावकों ने स्कूल पहुंच कर शिक्षकों से अपने बच्चे की शैक्षिक प्रगति का जायजा लिया।

Government Sr. Sec. School. Kanonda
Distt. Jhajjar (Haryana)
नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजकीय प्राथमिक पाठशाला कानौंदा (12953) जिला झज्जर के नकारा कमरों व उनके सामने बरामदा शामिल है की नीलामी दिनांक 12 मार्च 2026 को रा. प्रा. पा. कानौंदा के प्रांगण में होनी है। कमरों की संख्या 4, संख्या बरामदे 4, एक गेट का एरिया, एक ब्लॉक पानी की पुरानी टंकी शामिल है। इनकी कुल अनुमानित कीमत राशि 2,53,188/- रुपये है। बोली का समय दोपहर 12:30 बजे है। बोलीदाता के लिए निम्न नियम व शर्तें हैं :-

प्रत्येक बोलीदाता को नीलामी की राशि का 10 प्रतिशत का डीमांड ड्राफ्ट टोकन के रूप में जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी झज्जर के नाम देना होगा। सफल बोली दाता को कुल आरक्षित राशि का 25 प्रतिशत बोली के तुरंत बाद जमा कराना होगा। बोली कम से कम 1000 रुपए बढ़ाकर बोलनी होगी। बोली स्थल पर सुरक्षा एवं सामान की पूर्ण जिम्मेदारी बोलीदाता की होगी। बोली स्थल को 2 महीने में समतल करके देना होगा। अन्यथा उपरोक्त राशि जब्त कर ली जायेगी। विद्यालय मुखिया व डीडीओ की एनओसी के उपरांत ही बोली दाता की उपरोक्त राशि वापिस की जायेगी।

Sd/-Principal
G.S.S.S Kanoda (Jhajjar)

कार्यालय नगर परिषद, बहादुरगढ़

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राज सिंह (पति) पुत्र चंद्रभान, पुष्पा देवी (पुत्रवधु), हिमांशु ओल्हान (पोता), साक्षी ओल्हान (पोती) स्व. विरेन्द्र कुमार (पुत्र), स्व धनपति देवी पत्नी राज सिंह निवासी द्वारका सेक्टर-13 दिल्ली ने 0187670437 द्वारा ऑनलाइन एनडीसी पोर्टल पर प्रॉपर्टी आईडी नंबर 3BN99EM1 वार्ड नंबर 19/375 अग्रवाल कॉलोनी, नाहरा-नाहरी रोड जो कि नगर परिषद बहादुरगढ़ के प्रॉपर्टी टैक्स रिकार्ड में धनपति देवी के नाम दर्ज है। धनपति देवी की मृत्यु उपरांत अब नगर परिषद के रिकॉर्ड में उक्त आईडी नम्बर पर प्रार्थी के द्वारा वसीयत/वारसान प्रमाण पत्र के आधार पर अपना नाम तब्दील कराना चाहते हैं, जिसकी वसीयत/वारसान प्रमाण पत्र तहसीलदार बहादुरगढ़ द्वारा तस्दीक नहीं की गई है।

अतः आम व खास को इस नोटिस के माध्यम से सूचित किया जाता है कि उक्त संपति नम्बर 3BN99EM1 वार्ड नम्बर 19/375 अग्रवाल कॉलोनी, नाहरा-नाहरी रोड पर यदि कोई अन्य हकदार है या उक्त संपति पर किसी को कोई आपत्ति है तो वह सुबूतों सहित इस नोटिस के प्रकाशन के 30 दिन के अंदर-अंदर नगर परिषद बहादुरगढ़ कार्यालय में आकर अपना दावा पेश करे। अन्यथा इस नोटिस का समय समाप्त होने पर यह संपति नम्बर 3BN99EM1/17 वर्ग गज प्रार्थी राज सिंह (पति) पुत्र चंद्रभान, पुष्पा देवी (पुत्रवधु), हिमांशु ओल्हान (पोता), साक्षी ओल्हान (पोती) स्व. विरेन्द्र कुमार (पुत्र), स्व. धनपति देवी पत्नी राज सिंह के नाम से नगर परिषद बहादुरगढ़ के रिकार्ड में दर्ज कर दी जाएगी। जिसमें नगर परिषद बहादुरगढ़ की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

हस्ता/-कार्यकारी अधिकारी, नगर परिषद बहादुरगढ़।

बाबा प्रसाद गिरी महाराज मंदिर का वार्षिकोत्सव संपन्न

बाबा की महिमा का किया गुणगान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को बाबा प्रसाद गिरी महाराज मंदिर के 53वें वार्षिकोत्सव का समापन श्रीमहंत परमानंद गिरी महाराज की अध्यक्षता में बाबा प्रसाद गिरी जी की समाधि का जलाभिषेक व विशाल भंडारे के साथ हुआ। इस अवसर पर काफी संख्या में मौजूद श्रद्धालुओं ने बाबा की महिमा का गुणगान किया। वहीं विशाल भंडारे में हजारों की संख्या में साधु महात्माओं व बाबा के भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। दूर दराज क्षेत्रों से आए साधु महात्माओं को भंडारे के बाद मान-सम्मान देकर रवाना किया गया। मंदिर के श्रीमहंत परमानंद गिरी महाराज ने बताया कि प्रति वर्ष दुल्हेंडी पर्व से बाबा की याद में विराट संत सम्मेलन शुरू होता है। जिसमें दूर दराज के क्षेत्रों से विद्वान संत महात्मा शिरकत करके अपनी वाणी से प्रभु नाम का गुणगान करते है। समापन अवसर पर विशाल भंडारा लगाया जाता है।

झज्जर। वार्षिकोत्सव के समापन पर भंडारे में प्रसाद ग्रहण करते हुए श्रद्धालु।

मौके पर ये मौजूद रहे

इस अवसर पर नप चेयरमैन जिले सिंह सैनी, प्राचीन गोशाला के प्रधान प्रमोद बंसल, महेंद्र बंसल, मनीष बंसल, नगर पार्षद जयपाल सिंह बांगड़, नगर पार्षद दिनेश छिकारा, संजय गोयल, व्यापार मंडल के जिला प्रधान केशव सिंगल, एडवोकेट पंकज शर्मा, राम अवतार उर्फ दीपक गहलोत, धर्मेंद्र बसवाल, प्रीतम कुकड़ौला, सतनारायण गोयल सहित काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मतदान पार्टियों का प्रशिक्षण 9 व 12 को

झज्जर। पंजाब एवं हरियाणा बार काउंसिल के चुनाव-2026 के सफल एवं सुचारू संचालन को लेकर जिला प्रशासन द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार बार काउंसिल के चुनाव 18 मार्च को करवाए जाएंगे, जिनका संचालन जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से मतदान पार्टियों का प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। इसके तहत 9 मार्च तथा 12 मार्च को सुबह 11 बजे से संवाद भवन में मतदान पार्टियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मैरिट सूची में स्थान बनाने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

झज्जर। दा हाइट्स संस्था द्वारा शनिवार को स्कूल की आठवीं, नौवीं व ग्यारहवीं कक्षाओं के परीक्षा परिणाम की घोषणा की गई। संस्था निदेशक नवींद्र कुमार ने बताया कि ग्यारहवीं कक्षा के नॉन मेडिकल में रिया, विदित कुमार, डिम्पल व रितिका तथा मेडिकल संकाय में आकांक्षी व दिपाशा को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। इनके अलावा कला संकाय में दीपिका, आठवीं में वंशिका व नौवीं कक्षा में महक प्रथम रही। मैरिट सूची में स्थान बनाने वाले सभी विद्यार्थियों को शहीद जयदयाल पुनिया मैरिट प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया। निदेशक नवींद्र कुमार ने बताया कि परीक्षा परिणाम हर बच्चे की व्यक्तिगत मेहनत का परिणाम है।

K.R. MANGALAM
World School
Bahadurgarh

Where Curiosity Grows into Confidence
Affiliated to CBSE

Ranked No. 1
INNOVATORS CATEGORY
BY TIMES SCHOOL SURVEY
2025

ENGAGE. LEARN. INNOVATE.

ADMISSIONS
OPEN
2026-27
Nursery to Grade IX & XI
(Play Group Also Available)

Curious Minds | Strong Academics | Future Ready Learning

At K.R. Mangalam World School, Bahadurgarh, academics are designed to build strong foundations, clear thinking, and confident learners. With an innovative curriculum and a future-focused approach, we help every child learn with purpose and curiosity.

Our Academic Approach
- Experiential and project-based learning
- STEAM integrated across all grades
- Focus on critical thinking and problem-solving
- Multiple Intelligences based teaching

Learning Environment
- Smart digital classrooms
- Robotics and Atal Tinkering Lab
- Well-equipped subject-specific labs
- Rich libraries with digital resources

Beyond the Classroom
- PSPE for emotional and social growth
- Career readiness and life skills
- Speech, debate, and creative expression
- Sports, yoga, and mindfulness

The KRM Legacy of Excellence

40,000+ Students Studying | 50,000+ Alumni Members | 4,000 Faculty On Board

K.R. Mangalam stands as a trusted name in education. Our seamless admission process, modern infrastructure, and value-driven philosophy empower every learner to excel and lead with purpose.

admission@krmangalambahadurgarh.com
www.krmangalambahadurgarh.com
Sector 2, Near Gauri Shankar Mandir, Bahadurgarh, Haryana 124507

9549899503
The School is Open for Admissions on All Days

G.K.- II | Vikaspuri | Kailash Colony | Paschim Vihar | Vaishali | Greater Noida | Faridabad | Gurugram | Bahadurgarh | Panipat | G.K.- I (IB) | Lucknow | Indirapuram

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
विशेष
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
P-1
रोहतक,रविवार 8 मार्च 2026

हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लद गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

अभी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दर्शक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एक्सक्लूसिविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

गढ़ रहीं जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रेसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गईं कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बदौलत भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रहीं सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही हैं।

हासिल कर रहीं वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनी है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

बदल रही है सामाजिक मानसिकता

हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल की जा सकती है। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होतीं। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।

परिवार-कार्यक्षेत्र में संतुलन बनातीं महिलाएं

{ बदलाव / अपराजिता }

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

सोच में आया बड़ा बदलाव: पहले के दौर में जहां लड़कियां परिवार और समाज के दबाव में अपनी शिक्षा और करियर को लेकर समझौता कर लेती थीं, आज वे कतई ऐसा नहीं कर रही हैं। आज युवा महिलाएं अपनी पहचान का केंद्र विवाह को नहीं, अपनी निजी उपलब्धियों (जिनमें करियर और उनकी अपनी रचनात्मकता शामिल है) को विवाह से कहीं ज्यादा तरजीह दे रही हैं। आज की युवा महिलाएं पहले अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, अपनी आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहती हैं, इसके बाद विवाह के बंधन में बंधती हैं। दिल्ली, बेंग्लुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रहीं निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादाद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- कॉरपोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।

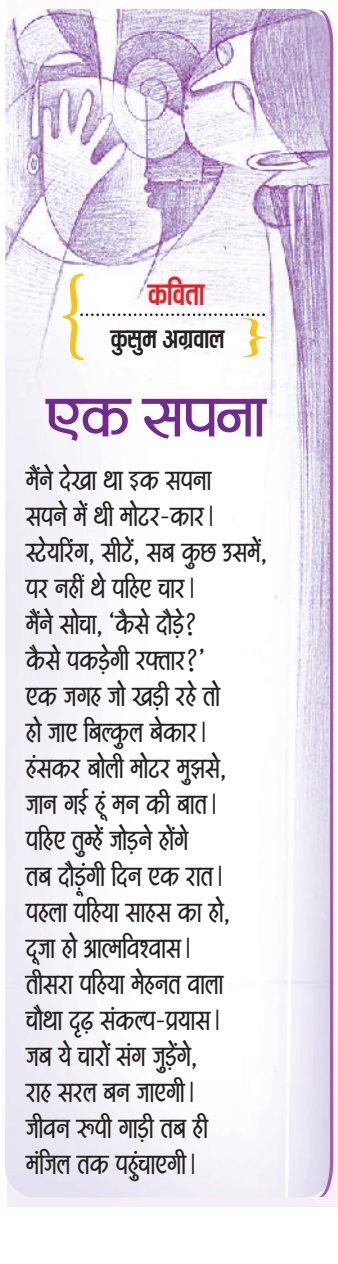

{ कविता / कुसुम अग्रवाल }

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना
सपने में थी मोटर-कार।
स्टेयरिंग, सीटें, सब कुछ उसमें,
पर नहीं थे पहिए चार।
मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े?
कैसे पकड़ेगी रफ्तार?'
एक जगह जो खड़ी रहे तो
हो जाए बिल्कुल बेकार।
हंसकर बोली मोटर मुझसे,
जान गई हूं मन की बात।
पहिए तुम्हें जोड़ने होंगे
तब दौड़ूंगी दिन एक रात।
पहला पहिया साहस का हो,
दूजा हो आत्मविश्वास।
तीसरा पहिया मेहनत वाला
चौथा दृढ़ संकल्प-प्रयास।
जब ये चारों संग जुड़ेंगे,
राह सरल बन जाएगी।
जीवन रूपी गाड़ी तब ही
मंजिल तक पहुंचाएगी।

{ लघुकथाएं }

सपनों की उड़ान

तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूं?' दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!

थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूं, समझ नहीं आ रहा मुझे!' रीमा बुझे स्वर में बोली।

'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सब को छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।

एआई इमेज

शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रुटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।

थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूं। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

'लेकिन बच्चे..!' रीमा ने पूछा।

'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।

'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।

रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

हार्दिक शुभकामनाएं !

शांति आधे घंटे की छुट्टी मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।

'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।

एआई इमेज

'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...।' ठेकेदार चिल्लाया।

बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...।'

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'

ठेकेदार ने बेला को डांटा।

उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

घरेलू महिला

आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रखा है।' आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।

आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसी की किश्त जमा कर देना जरा।'

इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।

पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसी के रुपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता इससे।' बड़बड़ करता पवन पूजा घर में पहुंचा।

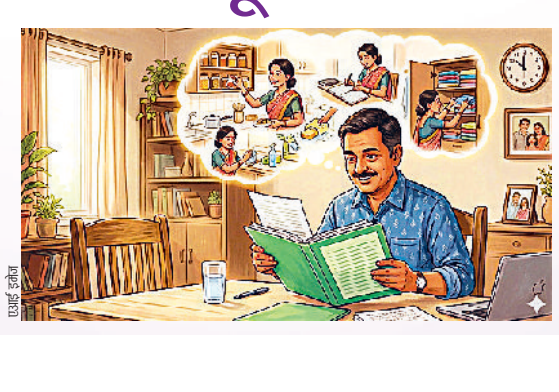
एआई इमेज

हरी फाइल एक नजर में ही ऊपर रखी दिख गई। उसने फाइल को खोला। ऊपर ही वह पॉलिसी रखी थी। उसके बाद उत्सुकता से पवन ने पूरी फाइल पलटकर देख ली। एक-एक कागज को करीने से उसमें रखा गया था। एक सूची भी अलग से बना रखी थी कि किस साल कौन-सी पॉलिसी मैच्योर हो रही हैं। इतना ही नहीं एक छोटी-सी नोटबुक में पासवर्ड भी लिखे थे। आशी को पवन बस घरेलू महिला ही मानता था। लेकिन उसका तो हर काम इतना सलीके से होता है। पवन ने पॉलिसी के रुपए जमा कर दिए। फाइल को करीने से यथास्थान रख दिया।

अब वह अपने शेल्फ को ठीक कर रहा था। जहां उसने अपने निजी कागज कचरे की तरह यहां-वहां घुसा रखे थे। *

-पूनम पांडे

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुंशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम हो, जो विवाह होने के बाद भी दहेज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दांपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं,
संपादन: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए,
प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिग्मो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिग्मो

सांस्कृतिक पर्व

धीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समुद्र तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिग्मो फेस्टिवल या शिग्मो उत्सव। शिग्मो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिग्मो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिग्मो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिग्मो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिग्मो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिग्मो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिग्मो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिग्मो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का दूसरा प्रमुख नृत्य हैं-रोमातामेल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझे की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिग्मोत्सव में सदियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिग्मो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिग्मो

ग्रामीण और शहरी शिग्मो उत्सव वैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिग्मो को क्रमशः धाकटो शिग्मो यानी छोटा शिग्मो और व्हाडलो शिग्मो यानी बड़ा शिग्मो कहा जाता है। छोटा शिग्मो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिग्मो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिग्मो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिग्मो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतियों का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिग्मो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

संस्कृति-संरक्षण का माध्यम

शिग्मो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिग्मो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिग्मो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है। *

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन

शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूं' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिन्हें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मविश्वासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको रचनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिद्दत से टिके रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हौसला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निर्धारित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

समझ लें सटीक फॉर्मूला

आपके लक्ष्य छोटे हों या बड़े, उनमें सफलता जरूर मिलेगी अगर आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और उसे पाने का सही फॉर्मूला जान लें। इसके लिए कुछ बातों को समझ लें।

- लक्ष्य की कोई डेडलाइन ना हो तो वह सिर्फ एक कल्पना या सपना मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए हर लक्ष्य की एक समय सीमा तय करें।
- लक्ष्य और समय सीमा तय हो जाए तो वह आपका उद्देश्य बन जाता है। इसे पूरा करने की योजना बनाएं।
- लक्ष्य पाने के लिए आपको निरंतरता का भी ध्यान रखना होगा। यानी आपको नियमित रूप से अपने लक्ष्य को हासिल करने में जुटा रहना पड़ेगा।

जानकारी

अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपक्रमों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैक्ट्रियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

स्मार्ट डॉग स्क्वाड

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्रार स्क्वाड भी है। इनके डॉग्स इतने ट्रेंड होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्क्वॉड ने शातिर किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डे की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24X7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असामाजिक तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख ड्यूटी के लिए निजी सुरक्षा गार्ड्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है। *

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एविएशन सुरक्षा, क्विक रिएक्शन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेस की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उभारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां

सिने ट्रेंड

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अघोषित रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पर्दे पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पर्दे पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पर्दे पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आप्टे ने नायिका नीरा की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वालों को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विसंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अछूत कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखांत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर कृत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों की समानता को व्याख्यायित करते है। राजकपूर और मीना कुमारी की ख्वाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को अपनी फिल्मों में प्रस्तुत किया है। घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री, किसान स्त्री, विवाहित और अविवाहित स्त्री, जुझारू स्त्री, संघर्षशील स्त्री और अन्याय, अत्याचार से लड़ने वाली स्त्री के कई रूप हिंदी फिल्मों में नजर आते रहे हैं। महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'औरत' और उसका संशोधित संस्करण 'मदर इंडिया' भारतीय नारी के संघर्ष और त्रासदी की महागाथा है, जिसमें ग्रामीण महाजनी सभ्यता की क्रूरता और अत्याचार से लड़ती हुई नारी की मार्मिक कहानी है। ग्रामीण सामंती अत्याचार से उत्पन्न डाकू समस्या को उजागर करने वाली फिल्मों में नारी की विवशता को 'मुझे जीने दो', 'गंगा जमुना', 'जिस देश में गंगा बहती है' और शेखर कपूर की 'बैंडिट क्वीन' में प्रभावी ढंग से पर्दे पर उतारा गया है।

राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' में समाज के अलग-अलग परिवेशों से आने वाली तीन स्त्री पात्रों के दारुण शोषण और मुक्ति के संघर्ष को दर्शाया गया है। इनकी ही फिल्म 'दामिनी' में बलात्कार से पीड़ित घर की एक नौकरानी को न्याय दिलाने की कहानी को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया है।

आर.के. बैनर की फिल्मों में स्त्री: राजकपूर द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों में भी स्त्री जीवन और संघर्ष के विविध रूप सामने आते हैं। 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दास्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करवाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी. आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह करवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जूझने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को छूने का प्रयास किया।

नारी संघर्ष की दास्तान सुनाती कुछ और फिल्में: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थप्पड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगूबाई काठियावाड़ी', 'नीरजा', 'क्वीन', 'गुलाब गैंग', 'इंग्लिश-विंग्लिश', 'पिंक', 'दंगल', 'छपाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं। *